चौदहवी विकास संवाद मीडिया फैलोशिप 2018

अंतिम तिथि - 15 मार्च 2018

विषय-

- **नवजात शिशु एवं बाल स्वास्थ्य की बढ़ती बदहाली के लिए जिम्मेदार कारक और सरकारी, गैर-सरकारी प्रयास (2 फैलोशिप)**
- **मातृ स्वास्थ्य के गिरते मानकों के लिए जिम्मेदार सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं अन्य कारण**
- **शिक्षा के अधिकार के नौ साल**
- **बच्चों पर और बच्चों द्वारा किए जा रहे अपराधों में होते इजाफे की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं अन्य वजहें तथा सरकारी, गैर-सरकारी प्रयास**

फैलोशिप क्यों ?

विकास संवाद चौदहवीं मीडिया फैलोशिप के लिए आवेदन आमंत्रित करता है। यह फैलोशिप तेरह सालों से लगातार वंचित समुदाय से जुड़े मुद्दों पर मीडिया लेखन और शोध के लिए दी जा रही है। इसका मकसद मुद्दों के प्रति समझ बढ़ाना, जमीनी स्थितियों को सीधे देखना, शोध आधारित नजरिया व्यापक करना और मुख्यधारा के मीडिया में सामाजिक मुद्दों के दायरे को विस्तार देना है। फैलोशिप फील्ड रिपोर्टिंग को बढ़ावा देने और पत्रकारीय दृष्टिकोण के साथ संबंधित विषय पर शोध कार्य के लिए मदद करती है।

विकास संवाद क्या और क्यों ?

विकास संवाद की सोच उस दौर में उभरी, जब विकास की उपभोक्तावादी अवधारणा से प्रभावित मुख्यधारा के मीडिया में समाज के सबसे कमजोर तबकों से जुड़े मुद्दों के लिए जगह लगातार कम होती चली गई। विकास संवाद ने मीडिया और जमीनी स्तर पर जनमुद्दों की पैरवी कर रहे संस्थानों के बीच एक सेतु बनाने की कोशिश की है। इससे मीडिया के लिए मुद्दों तक पहुंच का दायरा तो व्यापक हुआ ही, विकास के मसलों पर पत्रकारों का लगातार जुड़ाव होता चला गया। हम मानते हैं कि विकास के मुद्दों पर संवाद ही हमारी शक्ति है। मीडिया फैलोशिप इस कार्य को व्यापकता देने का एक माध्यम है। अभी तक इस फैलोशिप के जरिए 71 पत्रकार साथी लेखन और शोध कार्य कर चुके हैं।

विषय विस्तार -

1 - नवजात शिशु एवं बाल स्वास्थ्य की बढ़ती बदहाली के लिए जिम्मेदार कारक और सरकारी, गैर-सरकारी प्रयास (इस विषय पर दो फैलोशिप दी जाएगी)

मध्यप्रदेश में बच्चों से संबंधित स्वास्थ्य मानकों की स्थिति गंभीर है। सैंपल रजिस्ट्रेशन सर्वे (एसआरएस) के मुताबिक मध्यप्रदेश में 50 बच्चे अपना पहला जन्मदिन नहीं मना पाते। जन्म के दौरान और जन्म के एक सप्ताह की अवधि में भी हजारों बच्चे दम तोड़ देते हैं। दरअसल हमारे समाज में प्रजनन अब एक स्वाभाविक प्रक्रिया न होकर तमाम चुनौतियों से भरी है, जिसमें हर साल हजारों बच्चे और माताएं मर रही हैं। कुपोषण, एनीमिया और स्वास्थ्य सुविधाओं के लचर ढांचे से ऐसी स्थिति बन रही है। टीकाकरण की सभी जगह तक पहुंच का अभाव एक दूसरा कारण

है। इस फैलोशिप के तहत इस परिस्थिति के जिम्मेदार कारक और इसके लिए किए जा रहे सरकार- गैर सरकारी कारकों की पड़ताल करना होगा।

2 - मातृ स्वास्थ्य के गिरते मानकों के लिए जिम्मेदार सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं अन्य कारण

शिशु एवं बाल स्वास्थ्य और मातृत्व स्वास्थ्य एक-दूसरे से जुड़े हुए विषय हैं। चिंता की बात है कि तमाम कोशिशों के बावजूद यह दुष्चक्र टूट नहीं रहा। बाल-विवाह, गर्भावस्था, एनीमिया, कुपोषण, और पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं की स्थिति कमोबेश सुधर ही नहीं पा रही। यही कारण है कि हमारे यहां अब भी मातृ मृत्यु बड़े पैमाने पर हो रही है। सरकार की ओर से मिलने वाली मातृत्व सहायता संबंधी योजनाओं का भी प्रभावी क्रियान्वयन नहीं हो पा रहा है। आखिर इसके पीछे कौन से सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कारण हैं, यह पता लगाया जाएगा।

3 - शिक्षा के अधिकार के नौ साल

देश में 1 अप्रैल 2009 को शिक्षा का अधिकार क्रांतिकारी कानून लागू हुआ था। इस कानून को लागू हुए 9 साल हो गए। यह ऐसा दौर रहा है जब शिक्षा का निजीकरण भी तीव्र गति से हुआ है। शिक्षा के अधिकार कानून के तहत दिए गए प्रावधानों की गुणात्मक एवं संख्यात्मक नजरिए से समीक्षा अब बेहद जरूरी लगती है। खासकर गरीब बच्चों के लिए 25 प्रतिशत आरक्षण का क्या असर रहा है यह भी एक महत्वपूर्ण बिंदु है। क्या सचमुच जिन लक्ष्यों को लेकर शिक्षा का अधिकार कानून बनाया गया था, वह हासिल हो रहे हैं।

4 - बच्चों पर और बच्चों द्वारा किए जा रहे अपराधों में होते इजाफे की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं अन्य वजहें तथा सरकारी, गैर-सरकारी प्रयास

बाल अपराधों के मामले में मध्यप्रदेश देश में अव्वल बना हुआ है। आखिर क्या कारण है कि शांति का टापू माने जाने वाला यह प्रदेश बच्चों के साथ अपराधों के मामलें में इतना क्रूर है और तमाम व्यवस्थाएं इसे रोक पाने में अक्षम साबित हो रही हैं। इंटरनेट का अंधाधुंध इस्तेमाल और इस पर कोई प्रभावी नियंत्रण नहीं होने से यह एक और नया खतरा सामने आ खड़ा हुआ है। इस पूरे दौर में बच्चों की सुरक्षा एवं संरक्षण का मुददा किसी एजेंडे में प्रमुखता से नहीं है। बच्चों पर और बच्चों द्वारा किए जा रहे अपराधों में होते इजाफे की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं अन्य वजहें क्या हैं और इसके लिए क्या सरकारी, गैर-सरकारी प्रयास किए जा रहे हैं, यह कितने सफल हैं।

फैलोशिप चयन के आधार

- मध्यप्रदेश में कार्यरत पत्रकार।
- पत्रकारिता में कम से कम तीन वर्ष का अनुभव।
- फैलोशिप में शोध के लिए जरूरी छुट्टी की सहमति।
- प्रदेश के विभिन्न हिस्सों में अध्ययन-भ्रमण में सक्षम
- अपने अखबार के संपादक या प्रभारी से खबर/ लेखों के प्रकाशन का सहमति-पत्र ।
- स्वतंत्र पत्रकार के लिए कम से कम दो प्रतिष्ठित समाचार-पत्र/पत्रिका के संपादकों की सहमति/अनुशंसा-पत्र।

विकास संवाद मीडिया लेखन फैलोशिप 2018

आवेदन की अंतिम तिथि - 15 मार्च 2018

चेक लिस्ट (आप जांच लें कि ये सभी दस्तावेज आपने संलग्न किए हैं या नहीं)

- आवेदन पत्र।
- छायाचित्र
- बायोडाटा।
- चयनित विषय पर 800 से 1000 शब्दों का एक अवधारणात्मक आलेख।
- लेख के अलावा एक शोध प्रस्ताव जिसमें विषय की जानकारी, विषय चुनने का कारण, काम करने का आधार और रणनीति, अध्ययन क्षेत्र, प्रविधि आदि का जिक्र हो)।
- संपादक का सहमति-पत्र। (स्वतंत्र पत्रकार के लिए दो अखबारों के संपादकों का सहमति-पत्र)।
- विषय से संबंधित या सामाजिक मुद्दों पर प्रकाशित पांच लेखों/समाचारों की छायाप्रति
- दो संदर्भ व्यक्तियों के नाम, पता संस्थान, ईमेल आईडी और संपर्क नंबर।

विकास संवाद फैलोशिप ज्यूरी

1. श्री गिरीश उपाध्याय, वरिष्ठ पत्रकार, भोपाल
2. सुश्री अन्नू आनंद, वरिष्ठ पत्रकार, नई दिल्ली
3. सुश्री श्रावणी सरकार, वरिष्ठ पत्रकार, भोपाल
4. श्री अरुण त्रिपाठी, वरिष्ठ पत्रकार, नई दिल्ली/वर्धा
5. श्री रिचर्ड महापात्र, वरिष्ठ पत्रकार, नई दिल्ली
6. श्री चंद्रकांत नायडू, वरिष्ठ पत्रकार, भोपाल
7. राकेश दीवान, वरिष्ठ पत्रकार, सदस्य सचिव, ज्यूरी

फैलोशिप के नियम

- चयनित फैलो को हर माह अनिवार्यतः कम से कम पांच दिन के लिए शोध क्षेत्र में अध्ययन-भ्रमण।
- छह माह के दौरान कम से कम 7 खबरें और 3 विस्तृत आलेख का प्रकाशन।
- शोध के आधार पर अंत में 10,000 शब्दों का एक आलेख। आलेख तथ्यों और निष्कर्षों पर आधारित हो।
- वेब या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के पत्रकारों को 5 आलेख/ समाचार प्रिंट माध्यम में प्रकाशित करवाना होगा।
- प्रत्येक फैलो को चौरासी हजार रूपए (84,000) की राशि तीन समान किस्तों में कार्य पूर्ण होने के बाद दी जाएगी। इसमें यात्रा व्यय, अन्य सभी खर्च व आयकर नियमों के तहत टीडीएस कटौती शामिल होगी।
- प्रत्येक फैलो को प्रति माह कार्य की प्रगति रिपोर्ट देनी होगी। समीक्षा बैठक में उपस्थिति अनिवार्य होगी।
- तीन माह बाद ज्यूरी समीक्षा करेगी। मापदंडों पर उचित न होने पर फैलोशिप को ज्यूरी की अनुशंसा के आधार पर बीच में समाप्त किए जाने का अधिकार होगा।
- फैलोशिप के दौरान फैलो को कोई अन्य फैलोशिप करने की पात्रता नहीं होगी।
- तय मापदंडों को पूरा नहीं करने पर फैलोशिप की पूरी राशि विकास संवाद को वापस करनी होगी।

आवेदन पत्र हमारी वेबसाइट www.mediaforrights.org **से भी डाउनलोड किए जा सकते हैं**

समन्वयक, विकास संवाद मीडिया फैलोशिप

ई-7/226, प्रथम तल, अरेरा कालोनी, धनवन्तरी परिसर के सामने, शाहपुरा, भोपाल

फोन: 0755-4252789, 9424467604, 9977958934, 9977704847

Email: vikassamvadmedia@gmail.com, website: www.mediaforrights.org

विकास संवाद मीडिया लेखन फैलोशिप 2018

आवेदन की अंतिम तिथि - 15 मार्च 2018

आवेदन का विषय - .....

नाम ..... आयु ..... लिंग.....

माता का नाम ..... पिता का नाम.....

पता.....

.....

मेल .....

फोन(एसटीडी कोड सहित)- निवास.....कार्यालय.....मोबाइल .....

वर्तमान संस्थान का नाम..... पद ..... स्थान .....

शैक्षणिक योग्यताएं

1 ....

2 ....

3 ....

4 ....

व्यावहारिक अनुभव / अन्य फैलोशिप/ अवार्ड/ शोध कार्य

1 ....

2 ....

3 ....

4 ....

विकास संवाद फैलोशिप में आवेदन करने का आपका मकसद और लक्ष्य-

.....

.....

.....

.....

आवेदन के साथ अलग से यह दस्तावेज लगाएं- छायाचित्र/बायोडाटा/ चयनित विषय पर 800 से 1000 शब्दों का एक अवधारणात्मक आलेख/शोध प्रस्ताव/ संपादक का सहमति-पत्र। (स्वतंत्र पत्रकार के लिए दो अखबारों के संपादकों का सहमति-पत्र)। विषय से संबंधित या सामाजिक मुद्दों पर प्रकाशित पांच लेख/समाचार की छायाप्रति/ दो संदर्भ व्यक्तियों के नाम, पता संस्था, ईमेल आईडी और संपर्क नंबर।